

## CBSE Test Paper 04

### अपठित गद्यांश

#### 1. निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

समय परिवर्तनशील है। जो आज हमारे साथ नहीं है कल हमारे साथ होगा और हम अपने दुःख और असफलता से मुक्ति पा लेंगे यह विचार ही हमें सहजता प्रदान कर सकता है। हम दूसरे की सम्पन्नता, ऊँचा पद और भौतिक साधनों की उपलब्धता देखकर विचलित हो जाते हैं कि यह उसके पास तो है किन्तु हमारे पास नहीं है। यह हमारे विचारों की गरीबी का प्रमाण है और यही बात अन्दर विकट असहज भाव का संचालन करती है।

जीवन में सहजता का भाव न होने के वजह से अधिकतर लोग हमेशा ही असफल होते हैं। सहज भाव लाने के लिए हमें एक तो नियमित रूप से योगासन-प्राणायाम और ध्यान करने के साथ ईश्वर का स्मरण अवश्य करना चाहिए। इसमें हमारे तन-मन और विचारों के विकार बाहर निकलते हैं और तभी हम सहजता के भाव का अनुभव कर सकते हैं। याद रखने की बात है कि हमारे विकार ही अन्दर बैठकर हैं। ईर्ष्या -द्वेष और परनिंदा जैसे दुर्गुण हम अनजाने में ही अपना लेते हैं और अंततः जीवन में हर पल असहज होते हैं और उससे बचने के लिए आवश्यक है कि हम आध्यात्म के प्रति अपने मन और विचारों का रुझान रखें।

- i. अधिकतर लोग हमेशा ही असफल क्यों होते हैं?
- ii. असहजता से बचने का क्या उपाय है?
- iii. कौन से विचार हमें सहजता प्रदान कर सकते हैं?
- iv. विचारों की गरीबी से लेखक का क्या अभिप्राय है?
- v. हम सहजता का विकास कैसे कर सकते हैं?

#### 2. निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

गीता के इस उपदेश की लोग प्रायः चर्चा करते हैं कि कर्म करें, फल की इच्छा न करें। यह कहना तो सरल है पर पालन करना उतना सरल नहीं। कर्म के मार्ग पर आनन्दपूर्वक चलता हुआ उत्साही मनुष्य यदि अन्तिम फल तक न भी पहुँचे, तो भी उसकी दशा कर्म न करने वाले की अपेक्षा अधिकतर अवस्थाओं में अच्छी रहेगी, क्योंकि एक तो कर्म करते हुए उसका जो जीवन बीता वह संतोष या आनन्द में बीता, उसके उपरांत फल के प्राप्त न होने पर भी उसे यह पछतावा न रहा कि मैंने प्रयत्न नहीं किया। फल पहले से कोई बना-बनाया पदार्थ नहीं होता। अनुकूल प्रयत्न-कर्म के अनुसार, उसके एक-एक अंग की योजना होती है। किसी मनुष्य के घर का कोई प्राणी बीमार है। वह वैद्यों के यहाँ से जब तक औषधि ला-लाकर रोगी को देता जाता है तब तक उसके चित्त में जो संतोष रहता है, प्रत्येक नए उपचार के साथ जो आनन्द का उन्मेष होता रहता है- यह उसे कदापि न प्राप्त होता, यदि वह रोता हुआ बैठा रहता। प्रयत्न की अवस्था में उसके जीवन का जितना अंश संतोष, आशा और उत्साह में बीता, अप्रयत्न की दशा में उतना ही अंश केवल शोक और दुःख में कटता। इसके अतिरिक्त रोगी के न अच्छे होने की दशा में भी वह आत्म-ग्लानि के उस कठोर दुःख से बचा रहेगा जो उसे जीवन भर यह सोच-सोच कर होता कि मैंने पूरा प्रयत्न नहीं किया।

कर्म में आनन्द अनुभव करने वालों का नाम ही कर्मण्य है। धर्म और उदारता के उच्च कर्मों के विधान में ही एक ऐसा दिव्य

---

आनन्द भरा रहता है कि कर्ता को वे कर्म ही फलस्वरूप लगते हैं। अत्याचार का दमन और शमन करते हुए कर्म करने से चित्त में जो तुष्टि होती है। वही लोकोपकारी कर्मवीर का सच्चा सुख है।

- i. कर्म करने वाले को फल न मिलने पर भी पछतावा क्यों नहीं होता?
- ii. घर के बीमार सदस्य का उदाहरण क्यों दिया गया है?
- iii. “कर्मण्य” किसे कहा गया है?
- iv. कर्मवीर का सुख किसे माना गया है?
- v. गद्यांश में गीता के किस उपदेश की ओर संकेत किया गया है?

## CBSE Test Paper 04

### अपठित गद्यांश

#### Answer

1.
  - i. जीवन में सहजता का भाव न होने की वजह से अधिकतर लोग हमेशा ही असफल होते हैं अर्थात् हमें अपनी स्थिति से संतुष्ट होना चाहिए।
  - ii. हम आध्यात्म के प्रति अपने मन और विचारों का रुझान रख कर दूसरों के प्रति ईर्ष्या आदि से मुक्त हो सकते हैं और इस तरह असहजता से बच सकते हैं।
  - iii. जो आज हमारे साथ नहीं है कल हमारे साथ होगा अर्थात् यदि हमारे मन में धैर्य और संयम का वास होगा तो हम अपने दुःख और असफलता से मुक्ति पा लेंगे यह विचार ही हमें सहजता प्रदान कर सकता है।
  - iv. दूसरे की सम्पन्नता, ऊँचा पद और भौतिक साधनों की उपलब्धि अर्थात् सम्पन्नता को देखकर अपना आत्मसंयम खो देना, उससे ईर्ष्या रखना तथा यह सोचना कि यह उसके पास तो है लेकिन हमारे पास नहीं हैं, ऐसे तुच्छ विचारों को मन में लाना ही विचारों की गरीबी है।
  - v. सहजता के विकास के लिए हमें नियमित रूप से योगासन, प्राणायाम और ध्यान करना चाहिए साथ ही ईश्वर का स्मरण भी अवश्य करना चाहिए। इससे हमारे तन-मन और विचारों में संयम आएगा और विकार बाहर निकलेंगे जिससे हम सहजता का अनुभव कर सकते हैं।
2.
  - i. कर्म करने वाले को फल न मिलने पर भी पछतावा इसलिए नहीं होता क्योंकि उसके मन में यह संतोष होता कि उसने संबन्धित कार्य के लिए प्रयास किया यदि इच्छा अनुसार फल नहीं मिला तो भी प्रयत्न न करने का पश्चाताप नहीं होता।
  - ii. सेवा के संतोष के लिए घर के बीमार सदस्य का उदाहरण इसलिए दिया गया है क्योंकि उस सदस्य की सेवा करते हुये जिस आशा, उम्मीद और संतोष की अनुभूति होती है वह अवर्णनीय है साथ ही उसके स्वास्थ्य लाभ की दशा में प्राप्त होने वाला सुख और आनंद अलग ही होता जबकि कर्म न करने की दशा में सिवाय पछतावे के कुछ नहीं मिलता।
  - iii. काम करने में आनन्द का अनुभव करने वालों को कर्मण्य कहा गया है।
  - iv. अत्याचार का दमन और शमन करने की भावना से कर्म करते हुये चित्त में संतोष का अनुभव ही कर्मवीर का सुख माना गया है।
  - v. कर्म करें फल की चिंता नहीं करें |